गतिविधियों से अवधारणा और कौशल निर्माण
(Concept and Skill Building through Activities)

श्रीमती अपूर्वा शर्मा (सहायक अध्यापक)
कंपोजिट विद्यालय डायट परिसर, विकास खण्ड – नगर क्षेत्र आगरा,
जनपद – आगरा, उत्तर प्रदेश

उद्देश्य –

कंपोजिट विद्यालय में एकल अध्यापिका होने के कारण सभी विषयों का शिक्षण, विद्यार्थियों की समझ विकसित करना और निर्धारित समय में पाठयक्रम पूर्ण करना एक बड़ी चुनौती थी। विद्यार्थियों को शैक्षणिक गतिविधियों में संलग्न रखना भी आवश्यक था , जिससे विद्यालय के अन्य विभागीय और सामुदायिक कार्य भी प्रभावित ना हो और विद्यार्थी केंद्रित होकर रोचकता से अपना कार्य करें व पढ़ाई को वास्तविक जीवन से भी जोड़ सकें। इस उद्देश्य के लिए अनेक विषयों को गतिविधि के माध्यम से एक साथ समावेशित करने का विचार आया ,जिससे विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के बीच अंतर्संबंध समझने, अवधारणाओं को रोचक व व्यावहारिक रूप से सीखने तथा ज्ञान को वास्तविक जीवन से जोड़ने के अवसर मिलें।

क्रियान्वयन –

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक विषय के विभिन्न प्रकरणों की गतिविधि को लर्निंग बाय डूइंग के माध्यम से कराते समय उसमें अनेक विषय जोड़े गए, जैसे विज्ञान में गणित, कृषि विज्ञान, भूगोल को समाहित किया गया। गृह विज्ञान में गणित, विज्ञान ,व्यावसायिक कौशल जोड़कर सिखाया गया। इतिहास ,विज्ञान, गणित, कला विषयों का शिक्षण कार्य एक साथ किया गया। पर्यावरण, इको क्लब, लर्निंग बाय डूइंग, कला ,विज्ञान जैसे विषयों को गतिविधि के माध्यम से एक साथ जोड़कर सिखाया गया । स्टेम एजुकेशन को ध्यान में रखते हुऐ, गतिविधि ,रोल प्ले, प्रयोग, नाटक ,पपेट शो आदि के माध्यम से शिक्षण को प्रभावी बनाया गया। उदाहरण स्वरुप कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार करायी जाती है :-

गतिविधि 1

अम्ल, क्षार, सूचक को पपेट के माध्यम से सिखाना

इस गतिविधि में विद्यार्थियों के द्वारा तीन कठपुतलियाँ बनाई गई. तीनों कठपुतलियों के नाम अम्ल रानी, क्षार रानी और इंस्पेक्टर सूचक सिंह रखे गए। नाटक के माध्यम से दैनिक जीवन में अम्ल और क्षार के विषय में बताते हुए सूचकों द्वारा उसकी पहचान करना सिखाया गया । फिर अम्ल रानी व क्षार रानी अपने -अपने दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले अम्ल जैसे नीबू, टमाटर, इमली, सिरका तथा क्षार जैसे साबुन, कॉस्मेटिक सोडा, बेकिंग सोडा आदि दिखाती हैं। फिर अम्ल रानी अपने पास क्षार रानी की चिट्ठी छिपा लेती है जिससे उनमें विवाद होता है।तब इंस्पेक्टर इंडिकेटर की एंट्री होती है। उसके पास सभी सूचकों जैसे हल्दी, लिटमस पेपर, फिनोफ्थलीन आदि के डंडे हैं।

उनके विवाद को इंस्पेक्टर सूचक सिंह लिटमस पेपर और हल्दी के माध्यम से उनकी पहचान कर सुलझाता है और कठपुतलियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अम्ल, क्षार व सूचकों की अवधारणा समझाई जाती है। इसी प्रकार कठपुतलियों के पपेट शो द्वारा विभिन्न विषयों को सरल व रोचक बनाया जाता है।

गतिविधि 2

क्यारी की दीवार को बहुउपयोगी चित्रों से पेंट करना

विद्यार्थियों ने दीवार पर शिक्षिका की सहायता से पेन्सिल द्वारा ग्राफ पेपर के प्रयोग से स्केच तथा फ्री हैंड स्केच बनाना सीखा। फिर विद्यार्थियों को प्राकृतिक व संश्लेशित रंगों में अंतर बताते हुए पेंट का प्रयोग करना सिखाया गया। विद्यार्थियों ने अति उत्साह के साथ चित्रों एवं रंगों के संयोजन के बारे में अपनी समझ विकसित करते हुए उन्हें मिलकर पेंट किया और साथ ही पर्यावरण विज्ञान के विभिन्न अवधारणाओं को रोचकता से समझा।

गतिविधि 3

प्राकृतिक गुलाल बनाना

इस रुचिपूर्ण गतिविधि के अंतर्गत विद्यार्थियों ने गुलाब,चुकंदर, हल्दी, गेंदा, नीम आदि प्राकृतिक वस्तुओं को धोकर, पानी में उबालकर छाना फिर उसे ठंडा करके कॉर्न स्टार्च में मिलाकर सुखाया और बराबर मात्रा में तौलकर उसकी पैकिंग की। विद्यार्थियों ने विभिन्न रंगों के प्राकृतिक गुलाल बनाए। यह एक अत्यंत छोटा प्रयास है किन्तु इस गतिविधि द्वारा बच्चे प्राकृतिक वस्तुओं की जानकारी लेने के साथ-साथ उनका लाभ और उपयोग जान पाते हैं। इस गतिविधि में विद्यार्थी उत्साह पूर्वक एक टीम में काम करते हैं और कुछ नया करना भी सीखते हैं।

गतिविधि 4

मिट्टी का परीक्षण

विद्यार्थियों ने बीएसए ऑफिस, डायट व विद्यालय की क्यारी की अलग-अलग तीनों स्थानों की मिट्टी एकत्र की।मिट्टी को सुखाकर, छानकर, जल मिलाकर एक दिन के लिए रखा, फिर उसकी पर्तों के अनुसार मिट्टी के गठन के विषय में सीखा।

उसके अवयव जैसे रेत, सिल्ट, क्ले, ह्यूमस आदि का प्रतिशत संगठन ज्ञात करना सीखा। पीएच पेपर की सहायता से उसकी अम्लीय अथवा क्षारीय प्रकृति का पता लगाने की प्रक्रिया के बारे में जाना। यह गतिविधि विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और अभिवृत्ति को प्रोत्साहित करती है और इस प्रकार के अन्य गतिविधियों तथा प्रयोग करने के लिए उनको तैयार करती है।

प्रभाव -

- "करके सीखा " के सिद्धांत पर आधारित विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों को सहजता पूर्वक सिखाया जाना संभव हो सका, जिससे विद्यार्थियों में ज्ञानात्मक, बोधात्मक ,अनुप्रयोगात्मक , कौशलात्मक दक्षता का विकास हुआ व विद्यार्थी स्टेम एजुकेशन की ओर प्रेरित हुए हैं।
- विद्यार्थियों ने गतिविधियों के माध्यम से अम्ल, क्षार व सूचक के गुण, पहचान व उपयोग के बारे सीखा। क्राफ्ट, पपैट्री व नाटक मंचन से मंच पर प्रस्तुति देने का आत्मविश्वास ,रचनात्मकता, कल्पनाशीलता ,उच्चारण, अभिव्यक्ति कौशल व भाषा विकास में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिले।
- विद्यार्थियों ने प्राकृतिक व कृत्रिम रंगों के विषय में,उन्हें प्रकृति से प्राप्त करने का तरीका व स्वनिर्मित करने का कौशल सीखा. पैकिंग और लागत निकालने जैसे व्यावसायिक कौशलों का विकास हुआ। बच्चों में पर्यावरण शिक्षा, इको क्लब, विज्ञान, कला, टीम वर्क, सहयोग, कल्पना शक्ति लर्निंग बाय डूइंग, लगनशीलता जैसे गुणों का विकास हुआ।
- विद्यार्थियों ने मिट्टी के प्रकार मिट्टी के अवयव, प्रतिशत संगठन, पीएच पेपर का प्रयोग, मिट्टी की पर्तों को पहचानना और उनका मापन, प्रतिशत संगठन निकालना, पर्यावरण और मिट्टी से प्रेम, विज्ञान के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण सीखा।

इस प्रकार भांति-भांति की गतिविधियों की सहायता से समूह कार्य के द्वारा कक्षा शिक्षण को सक्रिय व रोचक बनाया जाता है। विद्यार्थी इस गतिविधियों के माध्यम से पढ़ने में रुचि लेते हैं, नियमित उपस्थित होते हैं और उनकी उपलब्धि स्तर में भी वृद्धि पाई गयी है। विद्यार्थी प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय आविष्कार अभियान, गणित ओलंपियाड, मीना मंच -मेरे बदलाव की कहानी, खेल कूद आदि प्रतियोगिताओं में आत्मविश्वास के साथ भाग लेते हैं और पुरस्कृत भी होते हैं। विद्यार्थियों के उत्कृष्ट प्रदर्शन को देखते हुए जिला स्तर पर होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विद्यालय के बच्चों को बुलाया जाता है।